

इवारः अकारः अक्षर साथ हो ॥ ३ ॥ अंतरीक्षयजुर्वेदभुवोविशुसनातनः ॥ ३० ॥ कारेतुलयपा
 नेः द्वितीयेपरावांसके ॥ ४ ॥ अकारसयजुर्वेदभीवीसुः इतीन उकारके साथ हो ॥ ४ ॥ दिविस
 यसासावेदस्वरित्येवमहे अक्षरः ॥ मकारेतुलयपाप्रेततीयेपरावांसके ॥ ५ ॥ त्वर्गभीसूर्य
 सामवेदभीसावेदः इवारः मकारके साथ हो ॥ ५ ॥ अकारेपीतवर्णा अक्षरजोगुरासमुद्रवः उ
 कारसात्विकेः अलो मकाररुसतामसः ॥ ६ ॥ अवश्नुतिनु ० प्रक्षरकावर्णा अक्षर उत्पत्ति
 कहेंः अकारपीतवर्णा रजोगुरासे उत्पत्तिहैंः उकार अक्षरवर्णाः सत्त्वगुरासे उत्पत्तिहोः म
 काररुसवर्णाः तमोगुरासे उत्पत्तिहो ॥ ६ ॥ अकारेव उकारेव मकारेव धनंजये ॥ अक्षर
 जासमायुक्तं इदमेकं सुनिष्कलं ॥ ७ ॥ हे अर्जुन अकार उकार मकार तीन अक्षर मिलिके
 उकार होता हैं ॥ ७ ॥ अकार सूर्यसंयुक्तं उकार सोमसंयुतः मकार अग्निसंयुक्तं उकार

गी. सा

२

परमं पदं ॥ ८ ॥ अकारसूर्यसंगः उकारचन्द्रमासेसंगः मकारअग्निसेसंगः होइके. ओकारपर
मधामहो ॥ ८ ॥ योनीबीजमहाबीजं बीजंतं बीजमयये उच्चारयेत् परं शक्तिवत्सरंध्रनिवासि
नीः ॥ ९ ॥ योनिबीजमंत्रमाहाबीजमंत्रमलकमेरुहनेवालापरमसक्ति उच्चारनकरणाः ॥ ९ ॥
ॐकारो भगवान् विशुद्धात्मा च त्रयोक्षरं ॥ तस्योच्चारणमात्रेण परं वत्साधिगच्छति ॥ १० ॥
कारविशुद्धा मुक्ति होसोतीन मुक्तिवत्सा. विशुद्धमहेश्वर. तीन अक्षरयुक्तः ॐकारजज्ञे उच्चा
रणकरेः सोढुं परं वत्सा कि विषये जातो है ॥ १० ॥ त्रिस्थानं च त्रिमार्गं च त्रयोमंत्रा त्रयाक्षराः त्रि
मात्रं चार्द्धमात्रेण परावंच विशिष्यते ॥ ११ ॥ अरुतीनः इत्के अवस्थान होति नूमात्रा हैति नूतनः
रूप होति नू अक्षर होति नू अर्द्धमात्रा होः ऐसा ॐकार हो ॥ ११ ॥ अष्टांगं च चतुर्पादं त्रिस्था
णं पंचदेवताः ॐकारं यो भिजानाति वत्सा विशुद्धात्मात्मकः ॥ १२ ॥ एष ॐकारके अष्टांग

गुरुः

२

हो. वारपाउ हो. तीन स्थान हो. पृथ्वी १ जल २ तेज ४ आकाश ५ ऐहि पां स देवता हो. ब्रह्मा. विशु शिव
रूप हो. जो ॐ कार को न जानै. सो ब्राह्मणाना हि. ॥ १२ ॥ ॐ मित्येकाक्षर ब्रह्म ध्यायेते श्री नमयं हृदि श
य ब्रह्मादिरूपे लाभादाति तं निरंजनः ॥ १३ ॥ हृदय मेशब्द ब्रह्म रूप से. परब्रह्म सरूप ॐ इति एका
क्षरं प्रकाश रूप शब्द. सेन पाउने वाला निर्विकारे ॐ कार का ध्यान करणाः ॥ १३ ॥ ॐ कार प्रभवा केश
ॐ कार प्रभवा स्वरा ॐ कारात्प्रभव सर्वत्रैलोक्य सचराचरं ॥ १४ ॥ अब ॐ कार का माहात्म्य कहै. ॐ
कार से वेद उद्भू. ॐ कार से सप्रसोर उद्भू. ॐ कार से स्थावर जंगम तीन स्वर्ग मर्त्य पाताल उत्पत्ति भ
इ हो ॥ १४ ॥ तस्मान्न दभ्यसे नित्यं सर्वो गं परमे श्वरः ॐ कारेन समा रोप्य परं ब्रह्मा विचिंतयेत्
॥ १५ ॥ तत्र कारण से सब अंग परं ज्वरमान के ॐ कार का अभ्यास नित्य करणा. ॐ कार से स
हित कर्क परं ब्रह्म के ध्यान करणा ॥ १५ ॥ धृती रत्नि रत्नोपपं संतोष स मिध त्तं इन्द्रो याणि

गी. ता

३

पञ्चजक्त्या आत्मा यजति दिक्षीते ॥ १६ ॥ ॐ कारखसकमलहृदयविषेवसेहै तेत्को आभासविष
ये अशुतपरमे श्वर है ते सपरमे श्वर को ब्रह्म यज्ञ करि पूजे हो अवयज की सामग्री कहै धीः
जकि अग्नि मन का था मू संतोष की समिधा इत्युय कि पञ्चक के आत्मा यज्ञ कर्ता हो मकर्त है ॥
॥ १६ ॥ आत्मान मर रिं कृत्वा प्रणवे चोत्तरारणि ध्यान निर्मथना भासंदेह पस्या निगूढवत् ॥ १७ ॥
अग्निसंघान तेल क डि आत्मा हो निवे किल क डि ॐ कार है ध्यान कर राम धि है मधिक न दे
ह विषये अग्नि प्रगत होता है ॥ १७ ॥ ऊर्ध्व दहति पापानी दीर्घ मोक्ष प्रदायकं आप्यायते पुनो
वापि त्रिविधो चारु रोग ननु ॥ १८ ॥ अग्नि धोरि हो रतो इषा पनाश करे अग्नि वहुत हो इतो मु
क्ति करे मुन बहुत हो इतो संतोष करे तीन प्रकार ॐ कार उच्चारण करे से तिस इ श्वर
को पुजे जय जय भजये ॥ १८ ॥ तैल धार मिवा छिन्न दीर्घ घंटा निना दवत् ॥ अवाध पुन वंचा

पुरुः

३

ग्रंथस्य वेदस्य वेदवित् ॥ १८ ॥ तेलकिले विषुश्मधारः ऐसिः ३० कारकाधारः घंतकीन्यापि
शब्द होता है ऐसि अविनासि ३० कारको जानै सो वेदांत शास्त्र जानेवाला हो ॥ १८ ॥ प्राणायाम
परं ब्रह्म प्राणायाम परं शिवः प्राणायाम परं विशुः परं ब्रह्म स्वरूप है ॥ २० ॥ प्राणायाम जो वा
युसाधना परं ब्रह्म स्वरूप है ब्रह्मा विशु महेश्वरः इती न देवताः प्राणायाम है ॥ २० ॥ ब्रह्मातु पू
रकं ज्ञेयं कुंभको विशुरुच्यते ॥ रैचकतुतथा ज्ञेयश्चक्षुरक्षरपरं शिवः ॥ २१ ॥ पूरकर विषे ब्रह्माः
काध्यान करैः कुंभक विषे विशुकाध्यान करैः रैचक विषे महेश्वरकाध्यान करैः ऐहि पवनसा
धना कि विधि है ॥ २१ ॥ प्राणकंठेष्ठिकारूढं दक्षिणं प्राण पूरकं ॥ आसो ग्निलय कृत्वा जभादं
तातदागमः ॥ २२ ॥ कंठमे प्राण वायुरोकेः दाहिन नाभसे प्राण पूरेकेः आससे मिला उना ॥
॥ २२ ॥ नीलोत्पलदलशमूनाभिमध्ये पति स्थितं ॥ वतु भुजं माहात्मानं पूरकेन विचिंतये

गी. सा ॥ २३ ॥ नाभिकामध्यमोरः हनेवाला नालकमलजैसा श्यामवर्ण चारभुजा जो परमे श्वर पर
४ रक वायुसे ध्यानकर्ता ॥ २३ ॥ वस्त्राणोरक्तसौभाग्यं रक्षरक्षयितामहः कुंभके हृदयस्थाः
नं धायनं कमलासनं ॥ २४ ॥ हृदये कमलमे ध्यानकर्के रहणेवालाः लालवर्ण वस्त्रा कुंभक
वायुसे ध्यानकरणा ॥ २४ ॥ रेचकं इ श्वरविद्याध्वलाठस्थमहे श्वरः ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशैः
निर्मलपापनाशनं ॥ २५ ॥ कपालमे फटिकजैसा निर्मलवर्णसे रहनेवाला सवपापनाशकर्ते
वालाः माहादेव है रेचक वायुसे ध्यानकरणा ॥ २५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ अक्षराणि च मात्राणि
सर्वविंदुसमाश्रिताः विंदुभिर्भिद्यते नादो सनादः केन भिद्यते ॥ २६ ॥ अर्जुन कहते है ॥ श्रीकृ
ष्ण अक्षर उरु मात्रा एहि सब विंदुका आभा है ॥ विन्दुसे नाद को वेधे सनाद के साक वेधियो ॥ २६ ॥
॥ श्रीभगवानुवाच ॥ उकारश्च निनादेन वा जुगसंहरणातिकः सुखनासिकयोर्मध्ये वायुत्वं

गुरुः
४

वरतंगतं॥२७॥ अव श्री कृष्ण कहते हैं हे अर्जुन ॐ कार धनिकाना दत्ते कर वायु का से हार
करे नाडिक वायु चलावै अरु मुख काना सिका विच मे वायु का संचार करै ॥२७॥ इडा डि स्थितः
वज्रं पिंगला भाजु वाहरी ॥ सुक्ष्म नाडी भुरूपेण सप्तहं सत्वरूपकं ॥२८॥ इडा नाडि मे रहते चंद्र
मा पिंगलाना डि मे रहते सूर्य सुक्ष्म नाडि मे रहते माहा देव सोहि सत्वरूप है ॥२८॥ हंकारे
निर्गमिं योक्तं सकारं तं प्रवेसण ॥ हंकार शंभु रूपेण सकारं शक्ति रूप्यते ॥२९॥ हंकार से निक
ले सकार से भिन्न रजाते है हंकार माहा देव का रूप सकार शक्तिकारूप है ॥२९॥ प्रकृत वायु सं
चारेलक्षते देव मध्याता ॥ इडा च पिंगलाना डि सुक्ष्म नाडि तृतीयकं ॥३०॥ साक्षात् वायु का संचार क
रे इश्वर का दर्शन होये अवतीन नाडिक है इडा नाडि १ पिंगलाना डि २ सुक्ष्म नाडि ३ ॥३०॥ श
क्ति रूप स्थित चंद्र वाम नाडि प्रवाहिकं ॥ दक्ष नाडि प्रवाह च शंभु पिदि वाकरं ॥३१॥ वाडनाः

गी.सा

५

डिवहनेवाला शक्तिरूपवन्धमा राहनना डिवहनेवाला सूर्यरूपमाहादेव है ॥ ३१ ॥ निर्मलं वसः
मुदस्य यत्र नादो लयंगतः निरालं वपदपाप्रे चित्ते तु लयनागते ॥ ३२ ॥ जं हनादलभये चित्तमो
नादलये भयापि दे निरालं वस्थानपापि भयापि दे ॥ ३२ ॥ निवर्तते क्रिया सर्वे यस्मीनू दृष्टे परा
चरे ॥ सित्येकाक्षरं रूपपरं वस्मपकीर्तितः ॥ ३३ ॥ संपूर्णा क्रिया हो इना जो ना इश्वर देखापि दे
उजोर एक अक्षरं परं वस्म इश्वर कहते है ॥ ३३ ॥ नादांतरसमुत्पन्नं मध्ये भूयः प्रवाहिकं ॥ ३४ ॥
क्षमपरमानन्दतालुमुद्भिद्यवस्थितं ॥ ३४ ॥ नादका अंतर मे उत्पन्न भयाका फेरवीच मे वहने वा
ला ॥ ३४ ॥ कार सक्षमपरमानन्दरूपः तालू का मूल मे रहते है ॥ ३४ ॥ अत उर्ध्वनरेधाता मध्यकं मध्य
मध्यामं ॥ यदि ध्यायती श्रीष्टस्य संसारि मरणं नयेत् ॥ ३५ ॥ तालुस्य उर्ध्वमेले कर्क मध्यममोरह
ते है ॥ सो इश्वर को ध्यान करे तो संसार मरण नहि होते है ॥ ३५ ॥ अनहदस्य शब्दस्य तस्य शब्दस्य

गुरुः

५

योधनिरंतर्गतो ज्योती ज्योतिरंतर्गतोर विः॥३६॥ तालु से उपर अनहद शब्द होता है ते स शब्द विषे
धनि होता है धनि विषे ज्योती स है ज्योती स विषे सूर्य है॥३६॥ र विरंतर्गति स्थाणः स्थाण रंतर्गति म
नः॥ तन्मनो विलयं याति तद्विशो परमं पदः॥३७॥ सूर्य विषये शिव है शिव विषे मन है सो हि मन जा
हालीन होता है ता हा श्री विशु का परम ध्यान है॥३७॥ तत्पदं विद्या ते येन स विषो वेद पारग आ
दि भूतो मध्य भूतो - - - निरामयं॥३८॥ त्रिभूतं यो भिजानाति सर्वं मुच्यंति बंधनात्॥३८॥
भूतं भवे भवेदात्मा पुण्य पापैर्न लिप्यते॥३९॥ स भूतं भसिदं भोति भूतानां परमं पदं तत्पदं
परमं ध्यानं तद्व्यानं वल्ल उच्यते॥४०॥ सो विशु को परम धाम जो जाने सो हि वासन वेद शास्त्र स
व जाना है आदि मे भूत मध्य मे भूत अंत मे भूत सो हि तीन भूत जो जाने ते स को बंधन मोचन
होता है भूत भाव भयतो आत्मा का पुण्य पाप से निर्मल होता है भूत ते परम पद है ते भूत वि

गी.सा

६

षेध्यान है तस ध्यान को ब्रह्म कहते हैं ॥४॥ नाभि मूल स्थितं पञ्चनालं तस्य दश अंगुलं कोमलं तस्य
तं नालं निर्मलं तदधो मुखं ॥४१॥ नाभिकमल विषे कमल है दश अंगुल ते सकमल की नारि है :
सो नारि अति कोमल है उधो मुख कमल है ॥४१॥ कदलि पुष्प संकाशं चन्द्रका सुशितलं विशा
लदल संपूर्ण चारु हास सु निर्मलं नित्यानन्दमय स्थानं तद्विशोपरमं पदं ॥४२॥ तस्य केमल
का वर्ण के लें का फूल जैसा है चन्द्रमा का जै सिते लक्ष्मण की जोति है ते लक्ष्मण के वडे वडे दल है
सो कमल अती निर्मल सुन्दर है ताहा आनन्दमय जगा है सो श्री विशुका स्थान है ॥४२॥ हृदि
स्थितं पञ्चजम्बु पत्रं सकर्णिकं केशरं चारु हासं अंगुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ती ध्यायन्ति विशुपु
रुषं पुराणं ॥४३॥ हृदय मे कमल है सो कमल आठ वै दल है कर्णिका भि है केशर भि है ता
हा कमल का बीच मे अंगुष्ठ मात्र पुराण पुष श्री विशुका ध्यान वडा वडा मुनि लोक कर्ते है ॥४३॥

गुरु

६

गमागमस्थंगमनादिभूयविन्दुपदीप्रतिमिरांधकारं॥प्रसंतितेसर्वजनांतरस्थंनमान्यहंतंपर
 मात्मरूपं॥४४॥सोविश्वगमनमिर्नामिकर्कःआप्तातेजकाविंदुसेअंधकारकानांरौकर्कःसवपा
 रिकाहृदयमेरहरोवालाहैसापरमात्माइअरकोनमस्कारः॥४४॥अर्जुनउवाच॥५विः
 जेयंदराराधुःप्रगम्यजनार्दनः॥अधोमुखंतुह्यप्रहृदयंकेनगच्छति॥४५॥अर्जुनविंति
 कर्त्तेहैःहेश्रीकृष्णदेवजीउधोमुखजोहृदयेविषेकमलहैःजानामिकठिनहैःआराधणा
 कठिनहैःअरुपाउनामिकठिनहैःसोनामिकठिनहैःहेजनार्दनएकमलकीपाउनियुक्ति
 मेरिविषेआसाकरियो॥४५॥श्रीभगवानुवाच॥इदवायुमारोप्यपेरितोदरिसंस्थितेःततो
 निदेहमध्येस्थितंध्यायतज्वालावतीपुतं॥४६॥येतमेरहनाजोवायुइअनाडिनेपेरनाक
 र्कदेहमध्येमेरहताजोअतिज्वालावंतअग्निकोध्यानकरणाः॥४६॥रेचकंविधिसंयुक्तः

मी. सा

७

वायुमण्डलमगंधारयन्त्रसुविन्नश्चानपि गलयापुनः॥४७॥ वृत्तविन्नहोयेकेविन्नसंयुक्त
होयेके वायुमण्डलकामधामैरहनाजोरेचकवायुधारनाकरणा॥४८॥ तत्तपिंगलपूर्वधारा
दक्षीणयायदि॥ अधोमुखंतुह्यप्रदात्रिंशकेशराणि॥४९॥ फेरपिंगलानाडिसेहाहिनः
नाकसेवायुधैवनाडधोमुखजोहृदयकमलवतीसकेसरसंयुक्तभयाकाकमलहै॥५०॥ अ
धोमुखंतुह्यप्रमुहत्वपुनवेनतुगत्वातुपद्मकोशांतेविकाशपद्याधिनाशनं॥५१॥ हेअर्जुनउ
धोमुखजोहृदयविषेकमलहैतेल्लमलकेगर्भविषजाइकरः३०कारसेकमलकाप्रकासकर्तु
जोव्याधिकानाशहोइ॥५२॥ तदपश्यद्भवेत्यप्रसर्वगोत्रसुषुप्तद। अष्टपत्रंतुह्यप्रदात्रिंश
केशरैर्युतं॥५३॥ तस्यस्थितंविशुःइडादि। देदेवता। तस्यमध्यस्थितोभानुभानुमध्यगतशशी
ः॥५४॥ सोहिहृदयमेकैलजवदेष्टेसर्वसर्वविषेपरमसुखउजैःतल्लमलकिअष्टपत्रहैः

गुरुः

७

उदिवीच है तेस उदिके बौर के सर है तस उदिविषे पुरा पुरुषि स है अंगुष्ठ मात्र है म कहते हे अ
ष्टपत्र विषे अष्ट इन्द्रादि दिग्देवता है सो देवता जोति सरूप है तस मल के उदि मे सूर्य है सूर्य पर
चंद्र है ॥ ५१ ॥ आशिमध्यगतो वहि वक्रिमध्यगतो प्रभाः प्रभाः मध्यगतं पीठे नानारत्न प्रवेष्टितं ॥ ५२ ॥
अनेकरत्न संकीर्णः ज्वलनार्क समप्रभं तस्य मध्यस्थितं देव नारायण नमणाय ॥ ५२ ॥ चन्द्रपद अ
ग्नि है अग्नि मे जोति है जोति सिंहासन है सो सिंहासन कै सा है नाना प्रकार के रत्न सेवनाय के सूर्य
का जैसा प्रकास है ऐसि सिंहासन स विषे देव देव नारायण उत्पत्ति है ॥ ५३ ॥ श्रीवत्स को लभो
रत्नं पुराणिकाक्षरच्युतां संखचक्रगदापद्मं सुसलं खड्गमेव च ॥ ५३ ॥ वनमाला धनुर्बाण अष्ट
बाहुधरं हरी ॥ पद्म किंजल्क सा दृश्यत प्रकांचन संनिभः ॥ ५४ ॥ शुद्ध स्फटिक संकाशं समकां
ति समप्रभं सूर्य कोटि प्रकासं च चन्द्रकाटि सुशीतलम् ॥ ५४ ॥ के पुनर्न पुराभां च वदितुं न व

गी.सा

८

कुंदलपुसन्नवडनध्यायेतपीताम्बरंधरंहरिः॥५६॥ सोनारायणकाखरूपवर्णकैसाहैः श्रीवः
सकौलभद्धातिमेधारेहैः कमलजैसानयनहैः आठभुजाहैः आठभुजाविषे आठशस्त्रधारैहै
कौनकौनसखहैः संखचक्रगडामुसलखइहैः धनुषबाणअंकुशवनमालाधारैहोकमलका
जैसाकांचनन्यायिसरिरकावर्णहैः अंडस्यटकन्यायीः कोटिसूर्यकातेजन्यायीः कोटिवंडमाजै
साशीतर आठभुजाविषेताजबंधधारैहैः चरणविषे नूपुरधारैहैः कटिमेसुवर्णसिपरीहै
कानमेकुण्डलपहिरेहैः पीतांबरधारैहैः मुकुटहासेरहैः ऐसानारायकाध्यानकरणा॥५७॥
शतेश्वेतहरिविघातत्रेतायांरक्तवर्णकः हापरपीतवर्णः अनीलवर्णकः कलौयुगैः॥५८॥ सोह
रिकैसाहैः युगयुगमेरूपफेरिकेरूपधारैहैः सत्ययुगमेसेतोवर्णः त्रेतायुगमेलावर्णः
हापरयुगमेपहेलोवर्णः कलौयुगमेनीलवर्णः॥५९॥ पाशधोस्तलेविघातपाडोईवित

गुरुः

८

लंभवेत् ॥५७॥ सुतलंगुल देओतु जानु देओर सातलं ॥५८॥ माहातल मूरु देओ गृह्य देओर सातलं
 पाताल कठि देओतु सप्रमं परिकीर्तितं ॥५९॥ भूर्लोक नाभि मध्य स्थं भुवर्लोकं नुकुक्षिके ॥६०॥
 हृदि स्थं स्वर्गलोकं तुमहलोकं तु वक्षसि ॥६१॥ जनलोकं एतदेव तपोलोकं ललाठके ॥६२॥
 सत्यलोकं तु मूर्ध्नि सुभुवनानि चतुर्दशः ॥६३॥ फेरके साहसि है बौध भुवन आफर सरिर मे धारे है
 किसतर से धारे कहें तो पाई तर मे अतल है पाउ का माथि बितल है गोलिगादा सुतल है घुडा
 मेर सातल है साफर मे माहातल है लिंग मे रसातल है कस्थल मे पाताल है सात लोक कह है
 फेर सात लोक करते है नाभि मे भूर्लोक है पेट मे भुवर्लोक है हृदय मे स्वर्गलोक है छाति मे
 महलोक है गला मे जनलोक है कपाल मे तपोलोक है सीर मे सत्यलोक है एहि बौध भुवन है
 सुभुवः स्वेति मंत्रेन सरिरं परि सुधाति ॥ शरीरं पुरा बंधात्वा विमुक्तो दामिनी यथा ॥६४॥ येहि

गी. सा

८

मन्त्रसे शरीर उद्दि होये शरीर को विजु लिजै सा उकार है कह के ध्यान करणा ॥ ६४ ॥ तर मध्याग
तं देव मन्त्र मे काक्षरं परं उमिते काक्षरं रूपं हृत्पञ्चविंशोभितं अंगुष्ठमात्र मे रूपं ध्यायेदोः
कां र मिश्रः ॥ ६५ ॥ शरीर का भितर ओष्ठ उकार अक्षर रूप होये के सव पाणि का हृदये कम
ल मे शोभा कर्के अंगुष्ठ मात्र मे रा रूप है स सी मे र रूप उकार का ध्यान करणा ॥ ६५ ॥ अइस
संविने कल्प निर्विकारं निरंजनं अपमेय मजं देवं तं विद्या पुरुषोत्तमं ॥ ६६ ॥ जो मे रा रूप नि
र्मल स म रूप नित्य स स्वरूप विकार नहिः निरंजन है प्रमान एहि सोहि पुरुषोत्तम इश्वर
जांना ॥ ६६ ॥ तैलाग्निवर्त्तिसंयोगः मधुसुज्योतिरूपकः कारणां जोग विज्ञान हेतु साधन वर्जि
तं ॥ ६७ ॥ जैसा तेल अग्निवर्त्तिसिल के धुवान भया का जोती सरूप कारणा स्वरूप जोग स्पे
जांना जिस्का हेतु भि साधन भिनहि है ॥ ६७ ॥ निश्चयंत द्विजानि या विंदु भि निर्गतं शिवं अ

गुरुः

८

मात्रशब्दरहितं स्वरव्यंजनवर्जितः ॥ ६२ ॥ बिंदु से निकले सात्राभिः शब्दभिः स्वरभिः व्यंजनभिः नाः
हि हैः ऐसिक ल्याण रूप है कह के निश्चय जाना ॥ ६३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ अदृष्टे भावना नास्तीः
दृश्यमाने विनश्यति अवर्णितुं स्वयं ब्रह्म कथं ध्यायंति योगिनाः ॥ ६४ ॥ अर्जुन कहते हैंः श्री कृ
ष्ण देवजी अदृष्टं ब्रह्म विषे भावना उद्धेति नाहि दृश्यमान विना सजाने हे अवर्ण जो हे परं ब्र
ह्म स्वरूप सो अक्षर जो गिजरा कि स्वर से ध्यान कर्ता है ॥ ६५ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ अंत पूर्ण
बाहि पूर्णः मध्य पूर्णं च संस्थितं सर्व पूर्ण परात्मानः समाधि लक्ष्य लक्षणं ॥ ६६ ॥ श्री कृ
ष्ण कहते हैं हे अर्जुन जो गिजन कामति मुनो जो ब्रह्म आदि अंत पूर्ण जाते हैं मित्र बाहर
मध्य में आपनि विषे ब्रह्म को निरंतर पूर्ण जात है जो उक्ति एहि समाधि है ॥ ६७ ॥ यावत्प
श्येत्स्वगाकारं तावत्कालं विचिंतयेत् भिन्ने कुंभे यथा काशं स हा काशो विलीयते ॥ ६८ ॥ ज

गी. सा

१५

वतलकसवै आकाशो हे कह के नाहि देवेत वतलक ध्यान कर रण जैसा घडो पूटे छिड़े घडा का
आकाश वडा आकाश मे विला डत है ॥७१॥ विभिन्ने प्राकृत देहे पश्येदात्मानमात्मना यादस
परमं रूपं स्मरेत्पार्थ मनंतकं ॥७१॥ प्राकृतशरीर भिन्न भयापि हे जवात्मा शो परमात्मा को देख
नाः जिस परम रूप का निरंतर स्मरण करे है अर्जुन ॥७१॥ हृत्पद्मकर्णिकामध्ये अद्भुदीप
शिखाकृतं अंगुष्ठमात्रमवलम्ब्या येदोकारमीश्वरः ॥७२॥ हृदये कमल किंड दिविषे अद्भ
वाति जैसा बलते है स्थिर है अंगुष्ठमात्र रूप भगवान् का स्वरूप उकार का ध्यान कर रण ॥
॥७२॥ आसने शयते वापि तिष्ठन् गच्छन् सदा सुखी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन योगयुक्तो भवार्जुन
॥७३॥ हे अर्जुन वैठे तो स्वया तो खडे हो हिडे तो भियोग का युक्त कर रण ॥७३॥ विषयाभाभि
शास्त्रमधस्येदर्पणं यथा सर्वसंग निवृत्तात्मा पश्येदात्मानमात्मनः ॥७४॥ विषय मेलगे

गुरुः

१०

तो रिशास्त्र देषना दर्पन की न्यायी दर्शना देषा उति है। सब संगत्याग कर्के चित्र से परमात्मा को
देषना ॥७४॥ अर्जुन उवाच ॥ देहे नष्टे कुतो बुद्धिः बुद्धिहीने कुतो स्मृतिः स्मृतिहीने कुतो ज्ञा-
नज्ञानहीने कुतो गतिः ॥७५॥ अत्यंत मलिन देहं देहि वा त्यज निर्मलं उभयोरंतर्मज्ञात्मा क-
शे शौच विधीयते ॥७५॥ अर्जुन कहते हैं हे श्री कृष्ण देह नाश भया तो बुद्धि का हां से आ-
ये बुद्धि नाश भया तो स्मरण का हां होये स्मरण नाश होये तो ज्ञान का हां होता है विनाः
ज्ञान से मुक्ति कैसा होता है ॥७६॥ देह जो अत्यंत मयल लगे है परमात्मा जो अति निर्मल है
एहि का विष मे कि का अड करणा सो कहिये ॥७६॥ श्री भगवानुवाच ॥ न विद्धि इह ते देहः
सर्व ते घटिकापमेव ह्यशौचेन शुद्ध्यति यावत्तु बुद्धिर्न विंदते ॥७७॥ श्री कृष्ण कहते हैं हे अ-
र्जुन नौ घाल भया का घटा जैसा पूरने वाला देह का क्या अड करणा जब तो रिपु सैन हिषा

गी.सा

११

ये तव तोरि विसृज करण ॥ ७७ ॥ गर्भमिच्छा स मेधा वियावत्त ज्ञान न विंदते विसृज्य न स यज्ञानं
प्रथं त्यजति शेषवत् ॥ ७८ ॥ जो ज्ञानि जवत्त क ज्ञान नहि है तव तोरि शास्त्र देषना विसृजि
न भया का ज्ञान होय पीछे पेत भरे पिछे वाकि रह्या अन्न जैसा दते है ते सै शास्त्र भिन
हि देषना ॥ ७९ ॥ पठंत भ्रतुरा वेदा धर्म शास्त्र मने कथा आत्मानं येन विंदंति सधते यज्ञा
वस्मता ॥ ८० ॥ चार वेद पढे तो भि अनेक धर्म शास्त्र पढे तो भि जिन्ना आत्मा को नहि जाते है
तोहि सब पञ्च सरिषा है ॥ ८१ ॥ तिर्थेषु यथा यज्ञेषु काष्ठपाषाणमृन्मयोऽपतिमादौ मनी
षेषां तेन रामु टवेत सः ॥ ८२ ॥ तिर्थमेजो जमे काठे मे मन्त्रि मे पथर मे पतिमा मे इश्वर
कह के जिस्का मन मे है साभि मूर्ख है ॥ ८३ ॥ बाह्य यस्य मती किं वित्त भक्त्या देहस्थ मीश्वर
सो गृहपायसं त्यक्त्वा भिक्षा मृत्तिरुर्मति ॥ ८४ ॥ आ प्राशरीर मे इश्वर है तो भि इश्वर

गुरु

११

हमै मेहै कह के जित्का मति है सो कैसा है आ पूर घर घाने को क्षीर तयार है सो क्षीर के डके घर घ
र पिछे माग के घाणे वाला है सो सा दुर्मति है ॥८१॥ इदं फलं मिदं तीर्थं ये रमन्ते तपस्विनः ॥८१॥
आत्मा तिथि न जानंति तिथिं तेषां निरर्थकः ॥८३॥ ऐहि वडा तिर्थ है वडा फल देता है कहै केत
पत्नी लोक तिथि तिथि मे फेरते है जिन्को आत्मा तिथि नहि जाने इत्का तीर्थ गया का व्यर्थ है
॥८४॥ तिल मधो यथा तैलं शीर मधयथा घृतं काष्ठ मधयथा वृद्धि देहे देवो व्यवस्थितं
॥८५॥ जैसा तैल मे तैल है दुध का वीच मे घी उहे काठ का भित्र अग्नि है ते से आत्मा क्षीर मे
इश्वर है कहै के जाना जाने न दीप के देहे बुद्धि बल समा शिता वृत्त जाना नित्य रहते पुराण पात
कं ॥८६॥ जान से पूरा भया का देह बल विचार किया का बुद्धि भय तो बल सान रूपी अग्नि से
पुराण पाप नाश कर्तै है ॥८६॥ यथा जलं जलापन्नं शीर क्षिरं घृतं घृते अब गोषि भवे धर्मयः

गीसा

१२

थात्माप्रमात्मनि॥८७॥जैसेजलमेंजलसारनीकालनाइधमेंइधघिउमेंघिउसारनिका
रनातैसेवाकिधर्मरहतेहैंइश्वरमेंभित्तैसेहैं॥८७॥मुकुर्तमवियोगस्यएकाग्ररुतमान
सःनित्यंहंतिपापानियांतिजन्मशतैरपि॥८८॥जिसोएकविन्नकर्केदिघडियोगकर्तेहं
इनकासयजन्ममेदिनदिनकियाकापापनाशहोताहै॥८८॥गीतासारसिद्धंशास्त्रंगीता
रसमुद्रवतत्रस्थित्वावस्रज्ञानंवेदशास्त्रसमुच्चयः॥८९॥अवस्रगीतासारकौशाखकाः
श्रीभगवानमहिमाकहतेहैंहेअर्जुनएहिसवगीताकासारहैसबवेदशास्त्रकाअर्थहै
एसगीतासारकामतमेंरहनेवालाकोब्रह्मज्ञानहोताहै॥८९॥पठतांश्रएवतांवापिवि
शोमाहात्म्यमुत्तमःभारतंजुतिमवश्वविश्वोवक्त्रादिनिसृतं॥९०॥जोकोइश्रीविष्णुकामा
हात्म्यश्रीविष्णुकामुखसेनिकलाकायसगीतासारकापाठकरेअथवाअवणकरेतोप

ग्रह

१२

रं पद पावै ॥ ८० ॥ अष्टादश पुराणानि नव व्याकरणानि च निर्मथ चतुरो वेदानि सुनिनारतं कृतं
 ॥ ८१ ॥ भारतो दधि मंथान गीतानिर्मथित खेच सारमुद्धृत्य कृत्वा अर्जुनस्य मुखे कृतं ॥ ८२ ॥
 अथार पुराणनौ व्याकरण चार वेद सहित सवमधिकर व्यासदेवने माहाभारत किपा है मा
 हाभारतमधिकर सवगीतावनाया है भगवद्गीतामधिकर गीता सार चय के श्रीसुदेवजी
 अर्जुनके मुखाविंद मे हो कियो ॥ ८३ ॥ मलनिसे चिय पुंसां जल त्वा न दने दिने स कृमीता भवे
 त्मानं संसार मल नाशन ॥ ८४ ॥ नित्य जल त्वा न कीयती शरीर का समय लमंत्र सहोति है सः
 कवार गीता त्वा न करे तो संसार का मै पापरूपि समय लनाश होता है ॥ ८५ ॥ गीतानाम सह
 स्तेन सवराज मनुस्मृति पक्ष पक्ष गजेन्द्र स्प सर्वे नामैरायन स्मृति ॥ ८६ ॥ गीताने भित्त ह
 व्रनामे सेभिः अनेक सवस्तोत्रनेभि श्रीनारायण स्मरना कर्त्तमेहि गीता सार मे स्मरणा

गी.सा
१३

किंवा तो मुक्ति होते हैं ॥८४॥ सर्वशास्त्रमयी गीताः सर्वधर्ममय नमः सर्वतीर्थमयं गंगा सर्वदे-
वमयो हरिः ॥८५॥ गीता में सब शास्त्र हैं मन में सब धर्म हैं गंगामें सब थतिथ हैं ते सै सब
देवता ते तीस कोटि श्रीनारायण में हैं कह के जाना ॥८५॥ पाद में वाई पादें वा श्लोकार्द्ध श्लोक
में वचनित्य धारयते विप्रसमोक्षे मधिगच्छति ॥८६॥ एतद्गीता सारका श्लोकका एक पाउ अ-
थवा आधा पाउ अथवा आधा श्लोक जिसे पढे है सो मोक्ष होता है ॥८६॥ स्वमये कुरुवात्मा
न सात्ममध्ये खलं कुरु आत्मा मध्ये खगं कृत्या न किंचिदपि चिंतयत् ॥८७॥ हे अर्जुन बुद्धि आ-
कास में रष ना बुद्धि विषे पछि रूप रष के फेर कुछु चिंत नान करणा ॥८७॥ हृस्व ह्रस्वोत्सु
इत्या गीतानाम हारे मनत कीते नरा किं न त्वादंते कलौ मलविमोचनी ॥८८॥ एक हृस्व
रूपि रूप है स्वरूप में गीतारूपि हलौ फल फले है सो फल कलि जुग का पनाश करे

गुरु
१३

बालामनुष्यलोकगोकौनजातेहै॥८८॥गीताचगीताचकर्तव्याकिसन्यशास्त्रसंगहैंअसं
धंरारकेघोरेगीताध्यायीनपश्यति॥८९॥गीताशास्त्रसंग्रहकरणाअरुशास्त्रसंग्रहकी
याक्याहोताहैंकाहेगीतापठनेवालाजतीअंधकारघोरनरकमेनहिपरतेहैं॥९०॥गंगा
गीताचगायत्रीगोविंदोयस्यचेतसीःचतुर्गकारणांयुक्तंपुनर्जन्मनविद्यते॥९०॥आर
गकाजित्कावित्रमेहैंक्याचारगकारगंगागीतागायत्रीगोविंदसोफेरजन्मनहिहोतेहैं
मुक्तिपावै॥९०॥विषयानिअडंकुर्वातनीस्मृहसर्वकामिकःप्रियरिपुसमंपश्यन्सः
योगीपरमोमतः॥९०॥विषयअडककेसबकामनाछोडकेशत्रुमित्रवरोवरदेघरो
वालायोगीभहाउन्नमयोगीहैं॥९०॥यान्वयपद्मनामस्यमुख्यपद्मविकासिताज्ञानदग्ध
शरीरस्यपुनर्जन्मनविद्यते॥९०॥योगीतासारश्रीनारायणकामुखारविंदुसेनिकः

जुनि ५

जी.स्य

48

लेहें सोहि जान से मरण भया का शरीर फेर जन्म नहि होते हैं मुक्ति पावें ॥ १०२ ॥ यथा रविः
सर्वसंप्रभु के हुताशन एव नित्य सर्व भक्षत थै वयोगी विषयान् प्रभु के नलिषाते कर्म अभा
अभाताः ॥ १०३ ॥ जैसा श्री अर्यणो सब रस खाते हैः अग्नि देवता एो भि सब खाते हैः तै से यो
गि जन भी सब विषय भोग करे हैः करे तो भि अभा अभ कर्म से शरीर से ले पना है होत है ॥
॥ १०३ ॥ ०६ ॥ इति श्री भगवद्गीता श्री माहाभारते श्री कृष्ण संवादे मुक्ति प्रदो नाम गीता सा
र संपूर्णः ॥ ०६ ॥ स्वस्ति श्री सन्मत् २५६ आषाढ वदि १४ + + + + +

卷之十

इदं पुस्तकं साहेब राम बाबू बाहालु या कोशः शुभम् ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥

उरु

98